शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एफ. एम. प्रसारण : भाषा-व्यवहार

डॉ. लड्डू लाल मीना
सह आचार्य, हिन्दी
राजकीय कला महाविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

आलेख सार

वर्तमान में एफ.एम. चैनलों की बूमबाम है, हम बात करना चाह रहे हैं, रेडियो के निजी एफ.एम. चैनलों की, प्रसारण में उनके भाषा व्यवहार की। भारतीय रेडियो प्रसारण इतिहास में 1977 में फ्रीक्वेंसी मोड्यूलेशन ½F.M.½ की कहानी प्रारम्भ होती है और यहीं से प्रसारणीय संस्कारों मे एक नया अध्याय जुड़ जाता है, आगे चलकर 'फ्रीक्वेंसी मोड्यूलेशन' की इस तकनीक ने सभी को, विशेषकर युवा वर्ग को आकर्षित किया, प्रथम तो एफ.एम. ब्रॉडकास्टिंग की क्लेरिटी, उस पर नयी पीढ़ी की मनोनुकूल प्रस्तुति। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भारतीय रेडियो प्रसारण की दुनिया में दो बार बड़ी हलचलें हुईं, प्रथम बार रेडियो सीलोन की प्रतिस्पर्द्धा में 'विविध भारती सेवा' के मनोरंजन प्रधान पंचरंगी प्रसारण का प्रारम्भ होना और दूसरी टी.वी. चैनलों की प्रभावक आँधी के समक्ष टिके रहने की चुनौतियों का सामना करने के प्रयोजन से फ्रीक्वेंसी मोड्यूलेशन तकनीक द्वारा प्रसारण व्यवस्था की शुरूआत करना। ये दोनों प्रयोग रेडियो की साख को बचाने में सफ़ल रहे। एफ.एम.प्रसारणों का प्रारम्भिक दौर सरकारी रेडियो केन्द्रों से शुरू हुआ, यथा एफ.एम. रेनबो, एफ.एम. गोल्ड आदि।

इस मोड्यूलेशन फ्रीक्वेंसी की तकनीक ने निजी कम्पनियों को भी प्रसारण-व्यवस्था का हिस्सा बनने के लिए आकर्षित किया। कुछ समय बाद उन्हें भी यहाँ निर्धारित समय आवंटित किए जाने लगे और सन् 2001 के मध्य से तो एफ.एम. के निजी ट्रांसमिशन भी अस्तित्व में आ गए। ''अब तक आकाशवाणी का एकाधिकार था। अब प्रसार भारत के अन्तर्गत कुछ स्वतंत्र चैनलों को भी अनुमति देनी पड़ी है। ये 'रेडियो मिर्ची' 'मार्निंग मसाला' 'पोपट' जैसे सस्ते, हल्के-फुल्के मनोरंजन वाले कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं...., एफ.एम. की वजह से चूँकी आवाज बड़ी मधुर हो गई है। फिल्मी गानों का संगीत चूँकि जन-साधारण को बहुत अच्छा लगता है और एफएम. ट्रांजिस्टर चूँकि बहुत सस्ते दामों पर मिल जाता है इसलिए रिक्शेवाले से लेकर कार वाले तक टेपरिकार्डर की जगह अब एफ.एम. बजाते ही देखे जाते हैं।''[1] आज देश के छोटे-बड़े शहरों मे निजी कम्पनियों के एफ.एम. चैनलों का जाल बिछा हुआ है, अब तो गाँव, ढाणियों मे भी इसकी पहुँच होने लगी है इसकी लोकप्रियता में प्रसारण की श्रोता वर्ग तक स्पष्ट पहुँच के अलावा सजीवता, जीवंतता बनाए रखने मे इसकी दक्षता का भी अपना महत्व है साथ ही रेडियो जॉकी की मधुर आवाज़, वाचालता, वाक्पटुता, श्रोताओं को लेकर अंतरंग सुपरिचित दोस्ताना शैली, आकर्षक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अभिव्यक्ति कौशल अपना एक अलग अंदाज़ लिए है। ''अच्छी आवाज़ ईश्वर का आशीर्वाद होती है, परवरदिगार की नियामत होती है, प्रकृति का उपहार होती है। अच्छी आवाज़ के साथ यदि शुद्ध उच्चारण भी हो तो सोने में सुहागा है, और आगे-यदि इन दोनों के साथ प्रस्तुतीकरण रोचक, लोक-लुभावन, मनमोहक, कर्णप्रिय, मन को गुदगुदाने वाला हो तो उसकी खुशबू बहुत दूर तक वातावरण को खुशनुमा बना देती है।''[2]

जनसंचार के आधुनिक इलेक्ट्रॉय माध्यम की व्यापकता में विश्व की जानकारी त्वरित गति से आम आदमी तक पहुँचती है, लेकिन क्षेत्र या शहर विशेष की सामान्य गतिविधियाँ वहाँ की जनता तक नहीं पहुँच पाती, कई बार हम संसार के घटनाक्रम से वाकिफ़ होते हैं लेकिन अपने स्वयं के शहर या पड़ौस मोहल्ले की सूचना से अनभिज्ञ होते हैं, इस दृष्टि से आजकल एफ.एम. रेडियो सक्षम माध्यम है, इसके चैनल शहर मे बिजली की कटौती, जल वितरण, स्थानीय मौसम, बस, ट्रेन जैसे यातायात के साधनों की समय- सारिणी, शैक्षिक संस्थाओं, समारोह, आयोजनों, पुलिस एवं सामान्य प्रशासन जैसी अनेक प्रकार की मूलभूत सुविधाओं की जानकारी प्रदान करते हैं। आज ये निजी चैनल नयी युवा पीढ़ी के दोस्त बने हुए हैं प्रमुखतः उनके अनुसार ही इनकी प्रसारण-व्यवस्था की संरचना की जाती है, लेकिन एफ.एम. के निजी चैनलों की सरकारी रेडियो केन्द्रों की तुलना में समाजोपयोगी सार्थकता, महत्ता की वस्तुस्थिति क्या है ? सांस्कृतिक दृष्टि से इनका क्या स्वरूप है ? विशेषकर प्रसारण में इनकी भाषिक संरचना किस प्रकार की है ? इन सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर चिंतन की आवश्यकता है। आकाशवाणी केन्द्रों की प्रस्तुति हेतु कुछ नियम निर्धारित हैं, यहाँ राष्ट्रहित, जनहित को ध्यान में रखकर आचारसंहिता बनी हुई है उसी के दायरे में प्रस्तुति होती है। इसीलिए कार्यक्रमों मे स्तरीयता भी बनी हुई है। आकाशवाणी ने हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक संस्कारों को सींचा है। 'आज पश्चिमी' सभ्यता और संस्कृति से ओत-प्रोत मनोरंजन हमारे परिवारों और युवा वर्ग मे जुड़ें जमा चुका है और हमारी नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं और राष्ट्रीय-गरिमा तथा गौरव से दूर कर रहा है। इसका दोष भी कार्यक्रम निर्धारकों की उदारता पर जा टिकता है, जो भारतीय परम्परा और संस्कृति की उपेक्षा कर अपने आपको अति आधुनिक कहलाने के लिए पाश्चात्य संस्कृति की ओर दौड़ पड़े हैं।''[3]

एफ. एम. के निजी चैनलों की प्रस्तुत विधाओं पर दृष्टि डालें तो इनमें भी सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से विलग सस्ते मनोरंजक प्रसारणों की भरमार है। यदा-कदा ही 'भारत की अमर कहानियाँ' जैसे कार्यक्रम सुनने को मिलते हैं। यहाँ वृद्ध, महिला तथा कृषक वर्ग की उपेक्षा है वहीं शैक्षिक प्रसारणों का भी अकाल सा पड़ा हुआ है ये विज्ञापन बाज़ार को साथ लेकर चलते हैं। इन पर सदाबहार सरस, कर्णप्रिय गीतों की तुलना में 'कोका कोला तू', 'शोला-शोला तू', 'तमन्चे पे डिस्को', जैसे नग़्मों का शोर है। इसी प्रकार आज इलेक्ट्रॉनिक संचार व्यवस्था के अन्तर्गत निजी टी.वी., रेडियो चैनलों का भाषिक व्यवहार भी बदला है, ये तू-तड़ाक मे बातें करने लगे हैं, इनके अमर्यादित भाषा-स्वरूप से मन खिन्न होता है, टी. वी. पर जब ये सुनने को मिलता है- 'हिम्मत है तुम मे', 'कहाँ छुपा है', 'मैं ये हूँ', 'मैं वो हूँ', 'कौन हो तुम', 'तुम्हारी औक़ात', 'मेरी औक़ात', जैसे वाक्य-प्रयोग करोड़ों दर्शकों को प्रभावित करते हैं। ''नकारात्मक शब्दों

का प्रयोग सुनने वालो को प्रायः ठेस पहुँचाता है जबकि सकारात्मक शब्द साहस मे श्रीवृद्धि करते हैं। उन्हें अहसास कराते हैं कि उनका सम्मान किया जा रहा है। मानवीय संबंधों का निर्माण करने, समस्याओं के समाधान तक के लिए सकारात्मक शब्द सहायक होते हैं। एक हर्षित शब्द हमारे मार्ग को प्रकाशित करने की क्षमता रखता है, एक प्यार भरा शब्द आपको आशीर्वाद दिलवा सकता है।''[4] भाषा व्यवहार द्वारा ही प्रस्तोता करोड़ों श्रोता दिलों मे जगह बना लेता है। आकाशवाणी की भाषायी संरचना गरिमामयी रही है, लेकिन आज निजी चैनलों द्वारा भाषा की रोचकता, आकर्षण, प्रभावीक्षमता का क्षरण होते हुए दिखाई देता है।

वर्तमान में निजी एफ.एम. चैनलों की भाषा-बुनावट नयी पीढ़ी को आकर्षित तो कर रही है, लेकिन इसमें विकृतियाँ भी बहुत हैं यहाँ बाज़ारू शब्दों की भरमार है। 95.0 MHz एफ.एम.तड़का पर 'रेडियो जॉकी' की उद्घोषणा 'आपके फेवरेट एफ.एम.तड़का पर आप सुन रहे हैं 'छ गाने टकाटक' या 'रज़ल्ट अपन देख सकते हैं', 'कड़क मॉर्निंग', 'तड़केदार बातें' तथा 92.7 पर 'झकास' जैसे शब्द प्रयोग आदि। एफ. एम. रेडियो के निजी चैनलों मे अंग्रेजी भी ख़ूब बघारी जाती है, प्रथम तो कुछ का नाम ही अंग्रेजी में हैं जैसे 'बिग एफ. एम.', 'माय एफ. एम.', 'रेडियो सिटी', 'रेड एफ.एम' आदि, उस पर अंग्रेजी शब्द-प्रयुक्ति जैसे 'ब्लॉक बास्टर म्यूज़िक', 'वेरी गुड स्टार', 'सो आई एम फिलिंग', 'एन्जॉय', 'आई विल बी बैक', 'नेक्स्ट मूवी का प्रमोशन', 'म्यूज़िक मतलब माय एफ.एम.', 'दैट आई नॉ', 'प्लीज', 'थैंक्यू सो मच', 'इवनिंग शॉ', 'लेडीज फर्स्ट', 'डेली', 'मंडे टू सटर्डे', 'म्यूज़िकल शॉ', गीतकार, संगीतकार बोलने के स्थान पर 'लिरिक बाई', 'कम्पोज़ बाई जैसे अनेक शब्दों का प्रयोग करते हैं। एफ.एम. का किसी भी प्रकार का चैनल हो प्रसारण संरचना में अंग्रेजी शब्द-प्रयुक्ति होने लगी है। ''जब 'ऐंकर' का कार्य कर रही कोई कोकिलकंठी, भेंट वार्ता देने आए पैंसठ वर्षीय वरिष्ठ नागरिक से पूछती है- ''वेल, अंकल, प्लीज यह बताएँ कि आंटी से आपकी लव मैरिज हुई थी कि अरेंज्ड मैरेज।'' अथवा यह फरमाइश कि ''अंकल अपनी स्टूडेण्ट लाइफ का अपना कोई लव अफेयर हमारे लिसनर्स को सुनाइए।'' तो ऐसी भेंटवार्ता में भाव और भाषा दोनों की निर्मम हत्या हो जाती है।''[5] रेड़ियो चैनलों के भाषा व्यवहार के सन्दर्भ में ज़रूरी नहीं कि भावों का प्रभावी सम्प्रेषण मात्र अंग्रेजी शब्द-प्रयुक्ति से ही पैदा हो, हिन्दी के शब्दों में भी वो ताक़त है, वो शक्ति है प्रभाव है जो श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। बरसों पहले जब देवकीनंदन पाण्डे हिन्दी में समाचारों का वाचन किया करते थे तो लाखों रेडियो श्रोता बहुत ही तल्लीनता से उन्हें सुना करते थे। यह हिन्दी भाषा का असरदार स्वरूप ही तो था। ''याद है हमें जब अमीन सायानी बिनाका गीतमाला पेश करते थे तब लाखों लोग रेडियो को छोड़ते ही नहीं थे। उनका अंदाज़-ए-बयां औरों से कुछ जुदा ही है जिसकी आज भी दुनिया दीवानी है।''[6] तात्पर्य यह है कि एफ.एम. चैनल आज हिन्दी के सांस्कृतिक भाषा स्वरूप को छोड़कर अंग्रेजी शब्द-प्रयुक्ति अथवा बाजारू बोली-भाषा द्वारा आकर्षण पैदा करने के प्रयास में हैं, यदि इन चैनलों द्वारा विषयानुसार, व्यावहारिक लहजे में, संयमित भाषा को उच्चारण की शुद्धता के साथ मधुर आवाज़ में मौलिक स्वरूप देकर प्रस्तुत करें तो निश्चय ही हिन्दी के एफ.एम. चैनलों के प्रति लोगों का आकर्षण और

बढ़ेगा।

सन्दर्भ:

1. जन पत्रकारिता, जनसंचार एवं जनसम्पर्क-प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित-पृ.सं 92-93

2. आवाज़ का जादू-डॉ इन्द्र प्रकाश श्रीमाली-पृ.सं. 30

3. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ विजय कुलश्रेष्ठ, डॉ रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ-पृ.सं. 359

4. आवाज़ का जादू-डॉ इन्द्र प्रकाश श्रीमाली - पृ.सं. 50

5. जन पत्रकारिता, जनसंचार एवं जनसम्पर्क-प्रो सूर्यप्रसाद दीक्षित-पृ.सं 93

6. आवाज़ का जादू-डॉ इन्द्र प्रकाश श्रीमाली-पृ.सं. 32